



SHRI MOHAN SINGH

Shri Mohan Singh is an eminent poet, playwright, critic, actor, director and activist. He is President of Duggar Manch, a foremost voluntary organization of Jammu Kashmir, working for the promotion, preservation and development of the language, literature and culture of 'Duggar', the land of warriors and patriots.

2. Born on 8th February 1955 in Duggar (District Samba), Shri Mohan Singh belongs to a family of soldiers. His grandfather, Thakur Rasal Singh was (geetan) Captain in State forces, and his father, Thakur Sakatter Singh had also served in State forces, but had left the job not compromising with discrimination. He was the first ideal of Mohan Singh who taught him to fight for justice and not to bow in under any circumstances. But, when he came into contact with Kehri Singh Madhukar, a stalwart of Dogri literature, Mohan Singh found the real path and poetry became the passion of his life.

3. Shri Mohan Singh was introduced to other stalwarts of Dogri such as Vedpal Deep, Ramnath Shastri, Dinu Bhai Pant, etc. by Shri Madhukar. He published his first book USS LOK, a collection of poetry, in 1978, when he was only 24 years old. He introduced a new idiom to Dogri poetry in general and to Dogri drama in particular. He is the first-ever street playwright of Dogri as well as of Jammu and Kashmir. He formed a group of young writers-artists namely Duggar Manch in 1976 and performed more than a thousand street play shows in far-flung and urban areas of the State and across the country under the banner of Duggar Manch. Message-oriented Street plays, written and directed by him, have done a tremendous role in the enlightenment of local folk for their language and culture.

4. Shri Mohan Singh being the convener of Dogri Sangharsh Morcha, struggled for the inclusion of Dogri language in the 8th schedule of the Indian Constitution and achieved the goal on 22 December 2003. As a cultural activist, he worked for the preservation of the rich but dying folk theatre of Duggar. He is a versatile actor and director of theatre, cinema, Doordarshan and Radio and an approved drama voice for AIR and a drama artist for Doordarshan. He also acted in Dogri and Hindi feature films.

5. Shri Mohan Singh has published 39 books, in which, 32 are original work, comprising poetry, plays, street plays, novels and criticism etc.; two translations from other languages and five compilations. His poetry and plays have been translated into other Indian languages. His plays are included in the syllabus of M. A. Dogri of University of Jammu and M. A. Hindi of the Central University of Jammu. One of his plays Neyain has been included in the syllabus of civil services examination.

6. Shri Mohan Singh is the recipient of several awards which include State Academy Award for creative writing in 1984 for Kala Suraj (play), Sahitya Akademi Award for creative writing 1991 for Apani Dafli Apna Raag (collection of three plays), Jammu Kashmir accession Golden Jubilee Award in 1997, Bharatiya Dalit Sahitya Akademi Award (J&K) in 1997, Sahitya Akademi Award for translation in 2001 for Machhere, Duggar Sahitya Rattan Award by Dogra Sadar Sabha J&K in 2004 and State Academy Award for creative writing in 2008 for Dogri Rangmanch.



श्री मोहन सिंह

श्री मोहन सिंह एक प्रख्यात कवि, नाटककार, आलोचक, अभिनेता, निर्देशक और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। वह जम्मू कश्मीर के एक प्रमुख स्वैच्छिक संगठन दुग्गर मंच के अध्यक्ष हैं, जो योद्धाओं और देशभक्तों की भूमि 'दुग्गर' की भाषा, साहित्य और संस्कृति के प्रचार-प्रसार, संरक्षण और विकास के लिए कार्य करता है।

2. 8 फरवरी, 1955 को दुग्गर (जिला सांबा) में जन्मे, श्री मोहन सिंह सैनिक परिवार से संबंध रखते हैं। उनके दादा, ठाकुर रसाल सिंह (गीतन) सरकारी सेना में कप्तान थे और उनके पिता, ठाकुर सकत्तर सिंह ने भी सरकारी सेना में सेवा की थी, लेकिन भेदभाव के विरोध में नौकरी छोड़ दी। वह मोहन सिंह के पहले आदर्श थे जिन्होंने न्याय के लिए लड़ना और किसी भी परिस्थिति में न झुकना सिखाया। परंतु, डोगरी के दिग्गज साहित्यकार केहरी सिंह मधुकर के संपर्क में आने पर मोहन सिंह को असली राह मिल गई और कविता उनका जुनून बन गई।

3. श्री मधुकर ने श्री मोहन सिंह का परिचय डोगरी के दूसरे साहित्यकारों जैसे वेदपाल दीप, रामनाथ शास्त्री, दीनू भाई पंत आदि से कराया। 1978 में 24 वर्ष की उम्र में उनकी पहली पुस्तक के रूप में, एक कविता संग्रह 'उस्स लोक' प्रकाशित हुई। उन्होंने सामान्य रूप से डोगरी कविता और विशेष रूप से डोगरी नाटक के लिए एक नया मुहावरा पेश किया। वह डोगरी के साथ-साथ जम्मू और कश्मीर के पहले नुक्कड़ नाटककार हैं। उन्होंने 1976 में दुग्गर मंच नामक युवा लेखकों-कलाकारों का एक समूह बनाया और दुग्गर मंच के बैनर तले राज्य के दूर-दराज के हिस्सों और शहरी क्षेत्रों तथा देश भर में एक हजार से अधिक नुक्कड़ नाटक किए। उनके संदेश युक्त लिखित और निर्देशित नुक्कड़ नाटकों ने स्थानीय लोगों को उनकी भाषा और संस्कृति के प्रति जागरूक बनाने में जबरदस्त भूमिका निभाई है।

4. डोगरी संघर्ष मोर्चा के संयोजक होने के नाते श्री मोहन सिंह ने डोगरी भाषा को भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल करने के लिए संघर्ष किया और 22 दिसंबर 2003 को उनका यह संघर्ष रंग लाया। एक सांस्कृतिक कार्यकर्ता के रूप में, उन्होंने दुग्गर के समृद्ध लेकिन मृतप्राय लोक रंगमंच के संरक्षण के लिए काम किया है। वह रंगमंच, सिनेमा, दूरदर्शन और रेडियो के एक बहुमुखी अभिनेता और निर्देशक हैं और उनकी आवाज़ आकाशवाणी के नाटकों के लिए स्वीकृत है और वह दूरदर्शन के नाट्य कलाकार भी हैं। उन्होंने डोगरी और हिंदी फीचर फिल्मों में भी काम किया है।

5. श्री मोहन सिंह की 39 पुस्तक प्रकाशित हुई हैं, जिनमें 32 मौलिक रचनाएं हैं, जिनमें कविता, नाटक, नुक्कड़ नाटक, उपन्यास और आलोचना आदि शामिल हैं; उनके नाम दूसरी भाषाओं से दो अनुवाद और पांच संकलन हैं। उनकी कविताओं और नाटकों का दूसरी भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। उनके नाटक जम्मू विश्वविद्यालय के एम.ए. डोगरी और केंद्रीय विश्वविद्यालय जम्मू के एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रम में शामिल हैं। उनके एक नाटक 'नेयैन' को सिविल सेवा परीक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

6. श्री मोहन सिंह को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिनमें कला सूरज (नाटक) के लिए 1984 में रचनात्मक लेखन का राज्य अकादमी पुरस्कार, 1991 में अपनी डफली अपना राग (तीन नाटकों का संग्रह) के लिए रचनात्मक लेखन का साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1997 में जम्मू कश्मीर एक्सेसन स्वर्ण जयंती पुरस्कार, 1997 में भारतीय दलित साहित्य अकादमी पुरस्कार (जम्मू-कश्मीर), मछेरे के लिए 2001 में अनुवाद का साहित्य अकादमी पुरस्कार, 2004 में डोगरा सदर सभा, जम्मू-कश्मीर द्वारा दुग्गर साहित्य रतन पुरस्कार और 2008 में डोगरी रंगमंच के लिए रचनात्मक लेखन हेतु राज्य अकादमी पुरस्कार शामिल हैं।